JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकताः एक संबंधात्मक अध्ययन

श्वेता सिंह 'आँसू' (शोधार्थी)
डॉ0 मीना कुमारी (प्राध्यापिका)
शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सार

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में लिंग तथा संस्थान की प्रकृति (सरकारी एवं गैर–सरकारी विशेष विद्यालय) के आधार पर दोनों चरों (उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता) के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। उत्तर प्रदेश के लखनऊ, वाराणसी एवं प्रयागराज जिलों के सरकारी एवं गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत 300 श्रवण बाधित विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन तकनीक द्वारा किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक का उपयोग किया गया।

अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि श्रवण बाधित छात्रों तथा सरकारी विशेष विद्यालयों के विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य धनात्मक किंतु सांख्यिकीय रूप से असार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ। इसके विपरीत श्रवण बाधित छात्राओं तथा गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों के विद्यार्थियों में दोनों चरों के मध्य धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के विकास में सहायक कारक हो सकती है, किंतु सृजनात्मकता का विकास अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं विद्यालयीय कारकों के संयुक्त प्रभाव से होता है।

मुख्य शब्दः श्रवण बाधित विद्यार्थी, उपलब्धि अभिप्रेरणा, सृजनात्मकता, विशेष शिक्षा।

प्रस्तावना

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए केवल शैक्षणिक उपलब्धि ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता का विकास भी समान रूप से आवश्यक है। उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति, कठिन परिश्रम तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करती है, जबकि सृजनात्मकता नवीन विचारों, समस्या समाधान क्षमता तथा मौलिक चिंतन को

विकसित करती है। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं ज्ञान–आधारित समाज में इन दोनों मनोवैज्ञानिक गुणों का विशेष महत्व है।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समक्ष संप्रेषण, भाषा विकास तथा सामाजिक सहभागिता से संबंधित अनेक चुनौतियाँ होती हैं, जो उनके मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक विकास को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसी स्थिति में यह जानना महत्वपूर्ण हो जाता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य किस प्रकार का संबंध विद्यमान है तथा क्या यह संबंध लिंग एवं संस्थान की प्रकृति के आधार पर परिवर्तित होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रस्तुत अध्ययन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1- लिंग के संदर्भ में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

2- संस्थान की प्रकृति के संदर्भ में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया है :

H_{01} : श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं है।

H_{02} : श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं है।

H_{03} : सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं है।

H_{04} : गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं है।

शोध विधि : इस अध्ययन के लिए शोधार्थी ने वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

न्यादर्श : प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने **यादृच्छिक न्यादर्श चयन तकनीक** का उपयोग किया है। इस अध्ययन के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राज्य के लखनऊ, वाराणसी एवं प्रयागराज जिले के सरकारी एवं गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत 300 श्रवण बाधित विद्यार्थियों को सम्मिलित किया है।

प्रयुक्त शोध उपकरण

1. **उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी :** इस मापनी का निर्माण प्रो. प्रतिभा देव एवं डॉ. आशा मोहन द्वारा 2012 में किया गया। यह मापनी विद्यार्थियों की उपलब्धि प्राप्त करने की अभिप्रेरणा, सफलता की आकांक्षा, लक्ष्य के प्रति समर्पण तथा कार्य के प्रति लगन को मापने हेतु विकसित की गई है।
2. **शाब्दिक सृजनात्मक चिंतन परीक्षण :** यह एक मानकीकृत सृजनात्मकता परीक्षण है, जिसका निर्माण बाकर मेहदी द्वारा 2022 में किया गया। यह परीक्षण विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता, कल्पनाशक्ति, नवीन चिंतन तथा समस्या समाधान क्षमता का अध्ययन करने हेतु विकसित किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण, व्याख्या एवं विवेचना

H_{01} : श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं है।

तालिका 1: श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध

चर	छ	स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (च)	सार्थकता मान
उपलब्धि अभिप्रेरणा	150	**0.07311**	0.374
सृजनात्मकता	150		

स्वतंत्रता अंश (कf) = 148

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक च = 0. 07311 प्राप्त हुआ। सहसंबंध गुणांक का यह मान धनात्मक है, जो यह दर्शाता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के बीच सकारात्मक दिशा में संबंध प्राप्त हुआ है। अर्थात् जिन श्रवण बाधित छात्रों में उपलब्धि प्राप्त करने की प्रेरणा अधिक होती है, उनमें सृजनात्मकता के स्तर में भी थोड़ी वृद्धि की संभावना देखी जा सकती है। हालांकि, सहसंबंध गुणांक का मान 0.07311 बहुत कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि यह संबंध अत्यंत कमजोर है। इसका अर्थ यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा में परिवर्तन होने पर सृजनात्मकता में अपेक्षित रूप से बड़ा परिवर्तन नहीं होता है।

सहसंबंध की सार्थकता की जांच करने के लिए प्राप्त च मान 0.374 का विश्लेषण किया गया। सामान्यतः अनुसंधानों में 0.05 सार्थकता स्तर को स्वीकार किया जाता है। यहां च मान 0.374 है, जो 0.05 से अधिक है। इसका तात्पर्य यह है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य प्रतप्त हुआ सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। दूसरे शब्दों में, प्राप्त धनात्मक सहसंबंध इतना मजबूत नहीं है कि यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के बीच वास्तविक संबंध मौजूद है।

स्वतंत्रता अंश (कि) = 148 के आधार पर किए गए परीक्षण से भी यही परिणाम प्राप्त होता है कि दोनों चरों के मध्य संबंध संयोग के कारण उत्पन्न हो सकता है। अतः उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता एक–दूसरे को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती हैं।

इस परिणाम का एक संभावित कारण यह हो सकता है कि श्रवण बाधित छात्रों की सृजनात्मकता केवल उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह कई अन्य कारकों जैसे पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक सुविधाएं, शिक्षण विधियां, सामाजिक समर्थन, आत्मविश्वास, भाषा संबंधी क्षमताएं तथा व्यक्तिगत अनुभवों से भी प्रभावित हो सकती है। इसी प्रकार, उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा रखने वाला छात्र आवश्यक नहीं कि उच्च स्तर की सृजनात्मक क्षमता भी प्रदर्शित करे, क्योंकि दोनों मनोवैज्ञानिक गुण अलग–अलग प्रक्रियाओं से संबंधित हो सकते हैं।

अतः संपूर्ण परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि श्रवण बाधित छात्रों में उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य अत्यंत कमजोर धनात्मक लेकिन असार्थक सहसंबंध पाया गया। इसलिए अध्ययन की शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है और यह माना जाता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा सृजनात्मकता के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध स्थापित नहीं होता है।

विवेचना

कुछ शोध निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन का समर्थन करते हैं। **टॉरेंस (1962)** ने सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन करते हुए बताया कि सृजनात्मकता केवल उपलब्धि अभिप्रेरणा से निर्धारित नहीं होती, बल्कि यह संज्ञानात्मक क्षमताओं, अनुभवों, पर्यावरणीय परिस्थितियों और स्वतंत्र चिंतन जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा रखने वाला व्यक्ति आवश्यक नहीं कि उच्च सृजनात्मकता भी प्रदर्शित करे। अतः उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के बीच कमजोर संबंध का पाया जाना वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के अनुरूप है।

इसी प्रकार, **अमैबिल (1983)** ने सृजनात्मकता के घटक सिद्धांत में स्पष्ट किया कि सृजनात्मक प्रदर्शन मुख्य रूप से क्षेत्रीय ज्ञान, सृजनात्मक चिंतन कौशल और आंतरिक अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है।

उनके अनुसार बाहरी उपलब्धि उन्मुखता या केवल सफलता प्राप्त करने की इच्छा सृजनात्मकता को सीधे प्रभावित नहीं करती। इसलिए उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य कमजोर संबंध वर्तमान अध्ययन के परिणामों को समर्थन प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त, **रनको (2004)** ने सृजनात्मकता को स्वतंत्र चिंतन, नवीनता, समस्या समाधान और जोखिम लेने की क्षमता से संबंधित बताया। उन्होंने यह सुझाव दिया कि अभिप्रेरणा सृजनात्मक प्रक्रिया में सहायक भूमिका निभा सकती है, लेकिन यह सृजनात्मकता का एकमात्र निर्धारक नहीं है। इस प्रकार वर्तमान अध्ययन में पाया गया असार्थक सहसंबंध इस विचार के अनुरूप है कि सृजनात्मकता अनेक व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय कारकों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम होती है।

हालांकि, कुछ अध्ययन वर्तमान निष्कर्षों के विपरीत परिणाम प्रस्तुत करते हैं। **मैकक्लेलैंड (1961)** के उपलब्धि अभिप्रेरणा सिद्धांत के अनुसार उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले व्यक्ति चुनौतीपूर्ण कार्यों को स्वीकार करते हैं, समस्याओं के समाधान के लिए नए तरीकों का उपयोग करते हैं तथा बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास करते हैं। इस आधार पर उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य सकारात्मक संबंध अपेक्षित किया जा सकता है।

इसी प्रकार, **डेसी – रयान (1985)** के आत्म–निर्धारण सिद्धांत के अनुसार आंतरिक अभिप्रेरणा व्यक्ति को अन्वेषण, स्वतंत्र चिंतन और नवीन विचारों के विकास के लिए प्रेरित करती है। उनके अनुसार प्रेरित व्यक्ति अधिक रचनात्मक व्यवहार प्रदर्शित कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के बीच अधिक मजबूत संबंध की संभावना को दर्शाता है, जो वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों से भिन्न है।

श्रवण बाधित छात्रों के संदर्भ में यह अंतर कई कारणों से समझा जा सकता है। उनकी सृजनात्मकता केवल उपलब्धि अभिप्रेरणा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि संचार क्षमता, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी वातावरण, विशेष शिक्षण सुविधाओं, आत्मविश्वास और सामाजिक अनुभवों जैसे कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए वर्तमान अध्ययन में उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कमजोर एवं असार्थक सहसंबंध प्राप्त होना इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि दोनों मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ स्वतंत्र रूप से विकसित हो सकती हैं।

अतः पूर्व अध्ययनों के आधार पर कहा जा सकता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य संबंध जटिल एवं बहुआयामी है। वर्तमान अध्ययन का निष्कर्ष उन अध्ययनों के अनुरूप है जो यह मानते हैं कि सृजनात्मकता केवल उपलब्धि अभिप्रेरणा का परिणाम नहीं है, जबकि कुछ अन्य अध्ययन दोनों के मध्य सकारात्मक संबंध की पुष्टि करते हैं।

H_02 : श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं है।

तालिका 2: श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध

चर	छ	स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (च)	सार्थकता मान
उपलब्धि अभिप्रेरणा	150	0.3825	0.000001365
सृजनात्मकता	150		

स्वतंत्रता अंश (कि) = 148

प्राप्त परिणामों के अनुसार, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध गुणांक च = 0.3825 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक धनात्मक है, जो यह दर्शाता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया जाता है। अर्थात् जिन श्रवण बाधित छात्राओं में उपलब्धि प्राप्त करने की अभिप्रेरणा अधिक होती है, उनमें सृजनात्मकता का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया जा सकता है। सहसंबंध गुणांक का मान 0.3825 यह संकेत करता है कि दोनों चरों के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक सहसंबंध विद्यमान है।

सहसंबंध की सांख्यिकीय सार्थकता का परीक्षण करने पर सार्थकता मान (च मान) = 0.000001365 प्राप्त हुआ। यह मान 0.01 तथा 0.05 दोनों सार्थकता स्तरों से बहुत कम है। अतः यह सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक सार्थक प्रापटी हुआ। स्वतंत्रता अंश (कि= 148) के आधार पर प्राप्त परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य प्राप्त हुआ संबंध केवल संयोग का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक वास्तविक एवं महत्वपूर्ण संबंध को प्रदर्शित करता है।

इस परिणाम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि श्रवण बाधित छात्राओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर उनकी सृजनात्मक क्षमता से संबंधित है। जिन छात्राओं में सफलता प्राप्त करने की इच्छा, लक्ष्य प्राप्ति की भावना और कार्य के प्रति अधिक लगन होती है, वे समस्याओं के समाधान में अधिक नवीन एवं रचनात्मक दृष्टिकोण अपना सकती हैं। उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा छात्राओं को नई परिस्थितियों में प्रयास करने, चुनौतियों का सामना करने तथा नवीन विचारों को विकसित करने के लिए अभिप्रेरित कर सकती है।

वर्तमान अध्ययन का परिणाम यह भी संकेत करता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा सृजनात्मक व्यवहार के विकास में सहायक भूमिका निभा सकती है। अभिप्रेरित छात्राएं अधिगम की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय भागीदारी करती हैं, नए

अनुभवों को ग्रहण करती हैं और अपनी क्षमताओं के उपयोग के लिए अधिक अवसर खोजती हैं। इस प्रकार उपलब्धि अभिप्रेरणा उनके सृजनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने वाला एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक हो सकता है।

हालांकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सहसंबंध किसी कारणात्मक संबंध को सिद्ध नहीं करता। उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता दोनों ही अनेक कारकों से प्रभावित हो सकती हैं, जैसे पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी सहयोग, शिक्षण विधियां, आत्मविश्वास, सामाजिक समर्थन तथा व्यक्तिगत अनुभव।

अतः संपूर्ण परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ। इसलिए शून्य परिकल्पना ष्श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं हैष को अस्वीकार किया जाता है और यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि श्रवण बाधित छात्राओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य सार्थक संबंध विद्यमान है।

विवेचना

वर्तमान अध्ययन के परिणाम **अमैबिल (1983)** के सृजनात्मकता के घटक सिद्धांत द्वारा समर्थित हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, अभिप्रेरणा सृजनात्मक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण घटक है। **अमैबिल (1983)** ने स्पष्ट किया कि आंतरिक अभिप्रेरणा व्यक्ति को किसी कार्य में गहराई से संलग्न होने, समस्याओं के समाधान में निरंतर प्रयास करने और नवीन दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरित करती है। अतः जिन विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक होती है, वे अधिक रचनात्मक चिंतन और नवीन व्यवहार प्रदर्शित करने की संभावना रखते हैं। यह सैद्धांतिक व्याख्या वर्तमान अध्ययन में उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य प्राप्त धनात्मक संबंध का समर्थन करती है।

वर्तमान परिणाम **मैकक्लेलैंड (1961)** के उपलब्धि अभिप्रेरणा सिद्धांत के अनुरूप भी हैं। उनके अनुसार, उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले व्यक्ति चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं, कठिन परिस्थितियों में निरंतर प्रयास करते हैं तथा समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी एवं नवीन तरीकों का उपयोग करते हैं। इस प्रकार, उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति को सक्रिय भागीदारी और रचनात्मक समस्या समाधान के लिए प्रेरित करती है। इसलिए वर्तमान अध्ययन में पाया गया सार्थक संबंध उपलब्धि अभिप्रेरणा की भूमिका को स्पष्ट करता है।

इसी प्रकार, **डेसी – रयान (1985)** द्वारा प्रस्तुत आत्म–निर्धारण सिद्धांत के अनुसार, जो व्यक्ति स्वयं को सक्षम और स्वतंत्र अनुभव करते हैं, वे अधिगम की गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं तथा अधिक सृजनात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। एक ऐसा वातावरण जो आत्मनिर्भरता, दक्षता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है, व्यक्ति की प्रेरणा और सृजनात्मक क्षमता दोनों को

बढ़ा सकता है। श्रवण बाधित छात्राओं के संदर्भ में उपलब्धि अभिप्रेरणा उन्हें शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने, आत्मविश्वास विकसित करने और अपनी सृजनात्मक क्षमताओं को व्यक्त करने में सहायता कर सकती है।

इसके अतिरिक्त, **गिलफोर्ड (1967)** ने सृजनात्मकता में अपसारी चिंतन के महत्व पर बल दिया। उनके अनुसार, जो व्यक्ति विभिन्न विकल्पों की खोज करते हैं और अनेक संभावित समाधानों को विकसित करने का प्रयास करते हैं, उनमें सृजनात्मक प्रदर्शन की संभावना अधिक होती है। उपलब्धि अभिप्रेरणा छात्राओं को अन्वेषण, प्रयास और नवीन विचारों के विकास के लिए अभिप्रेरित कर सकती है, जिससे उनकी सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि हो सकती है।

हालांकि, कुछ अध्ययनों के निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन से भिन्न भी पाए गए हैं। **टॉरेंस (1962)** के अनुसार, सृजनात्मकता एक जटिल क्षमता है, जो केवल अभिप्रेरणा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि बौद्धिक क्षमताओं, पर्यावरणीय परिस्थितियों, अनुभवों और व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं से भी प्रभावित होती है। उनके अनुसार, उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा रखने वाले सभी व्यक्ति आवश्यक रूप से उच्च सृजनात्मकता प्रदर्शित नहीं करते, क्योंकि सृजनात्मक अभिव्यक्ति अनेक कारकों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम होती है।

इसी प्रकार, **रनको (2004)** ने बताया कि सृजनात्मकता में मौलिकता, लचीलापन, स्वतंत्र चिंतन और जोखिम लेने की क्षमता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यद्यपि अभिप्रेरणा सृजनात्मक प्रदर्शन को बढ़ावा दे सकती है, लेकिन यह सृजनात्मकता को निर्धारित करने वाला एकमात्र कारक नहीं है। शैक्षिक अवसर, अधिगम वातावरण और व्यक्तिगत विशेषताएँ भी उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के संबंध को प्रभावित कर सकती हैं।

श्रवण बाधित छात्राओं के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक संसाधन के रूप में कार्य कर सकती है, जो उन्हें सक्रिय भागीदारी, निरंतर प्रयास और आत्मविश्वास के विकास के लिए अभिप्रेरित करती है। सकारात्मक शैक्षिक वातावरण, उचित सहयोग एवं सृजनात्मक गतिविधियों के अवसर इस संबंध को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वर्तमान अध्ययन में श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध प्राप्त हुआ। मध्यम स्तर का सहसंबंध यह संकेत करता है कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा सृजनात्मक क्षमता के विकास से संबंधित है। यद्यपि सृजनात्मकता अनेक कारकों से प्रभावित होती है, फिर भी उपलब्धि अभिप्रेरणा श्रवण बाधित छात्राओं में सृजनात्मक क्षमता के विकास का एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता कारक हो सकती है।

H03 : सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं है।

तालिका 3 : सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध

चर	छ	स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (च)	सार्थकता मान
उपलब्धि अभिप्रेरणा	150	**0.1238**	0.1313
सृजनात्मकता	150		

स्वतंत्रता अंश (कि) = 148

प्राप्त परिणामों के अनुसार, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (च) का मान 0.1238 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों चरों के मध्य **धनात्मक** किंतु **अत्यंत निम्न** स्तर के संबंध को दर्शाता है। इसका तात्पर्य यह है कि जिन विद्यार्थियों में उपलब्धि प्राप्त करने की अभिप्रेरणा अधिक प्राप्त हुई, उनमें सृजनात्मकता के स्तर में भी कुछ वृद्धि देखी गई, परंतु यह संबंध बहुत कमजोर था। दूसरे शब्दों में, उपलब्धि अभिप्रेरणा में वृद्धि के साथ सृजनात्मकता में थोड़ी सकारात्मक प्रवृत्ति दिखाई देती है, लेकिन दोनों चरों के मध्य मजबूत संबंध स्थापित नहीं होता है।

सहसंबंध की सार्थकता की जाँच के लिए प्राप्त सार्थकता मान (च मान) 0.1313 रहा, जो 0.05 के स्वीकृत स्तर से अधिक है। अतः यह सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से **सार्थक नहीं** प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता अंश (कि) = 148 के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य प्राप्त हुआ धनात्मक सहसंबंध संयोगवश भी उत्पन्न हो सकता है और इसे जनसंख्या स्तर पर सार्थक संबंध नहीं माना जा सकता है।

इस परिणाम के आधार पर अध्ययन की शून्य परिकल्पना ष्सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं हैष को स्वीकार किया जाता है। वहीं, वैकल्पिक परिकल्पना को समर्थन प्राप्त नहीं होता है। यद्यपि सहसंबंध गुणांक धनात्मक दिशा में है, परंतु इसकी न्यून मात्रा और सांख्यिकीय असार्थकता यह संकेत देती है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा अकेले सृजनात्मकता को पर्याप्त रूप से प्रभावित करने वाला कारक नहीं है।

इन परिणामों से यह संकेत मिलता है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता संभवतः अलग–अलग मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक कारकों से प्रभावित होती हैं। विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के लिए केवल उपलब्धि अभिप्रेरणा बढ़ाना पर्याप्त नहीं हो सकता, बल्कि विद्यालयी वातावरण,

शिक्षण विधियाँ, अवसरों की उपलब्धता, आत्म–अभिव्यक्ति के साधन तथा व्यक्तिगत अनुभव जैसे अन्य कारकों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कमजोर धनात्मक संबंध प्राप्त हुआ, किंतु यह संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। इस प्रकार उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य प्रत्यक्ष एवं सार्थक संबंध स्थापित नहीं किया जा सका।

विवेचना

उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य सकारात्मक संबंध के समर्थन में **गिलफोर्ड (1950)** ने बताया कि सृजनात्मकता व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का महत्वपूर्ण आयाम है, जिसमें मौलिक चिंतन, समस्या समाधान और नए विचारों का विकास सम्मिलित होता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि किसी कार्य में उत्कृष्टता प्राप्त करने की इच्छा व्यक्ति को अधिक सक्रिय, खोजपरक और नवीन दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित कर सकती है। इस प्रकार, उपलब्धि अभिप्रेरणा सृजनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने वाला एक कारक हो सकती है।

इसी प्रकार, **टॉरेंस (1962)** ने अपने अध्ययनों में पाया कि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा और सृजनात्मक अभिव्यक्ति के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान हो सकता है। हालांकि, उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि सृजनात्मकता केवल प्रेरणा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि बौद्धिक क्षमता, वातावरण तथा सीखने के अवसरों जैसे कारक भी इसे प्रभावित करते हैं। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन में प्राप्त कमजोर धनात्मक सहसंबंध के अनुरूप है।

इसके अतिरिक्त, **डेसी–रयान (1985)** के आत्म–निर्धारण सिद्धांत के अनुसार, आंतरिक अभिप्रेरणा व्यक्ति को अधिगम, अन्वेषण करने और रचनात्मक कार्यों में संलग्न होने के लिए प्रेरित करती है। इस दृष्टिकोण से उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य सकारात्मक संबंध की संभावना स्पष्ट होती है।

दूसरी ओर, कुछ शोध परिणाम वर्तमान निष्कर्ष के विपरीत भी पाए गए हैं। **अमैबिल (1983)** ने अपने अध्ययन में पाया कि सृजनात्मकता का विकास मुख्य रूप से आंतरिक अभिप्रेरणा, विषय संबंधी ज्ञान और रचनात्मक कौशल पर निर्भर करता है। उनके अनुसार, केवल उपलब्धि प्राप्त करने की इच्छा सृजनात्मकता को सुनिश्चित नहीं करती। कभी–कभी बाह्य उपलब्धि लक्ष्य व्यक्ति को निर्धारित नियमों और अपेक्षित परिणामों तक सीमित कर सकते हैं, जिससे स्वतंत्र एवं मौलिक चिंतन प्रभावित हो सकता है।

इसी प्रकार, कुछ अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता अलग–अलग मनोवैज्ञानिक संरचनाएँ हैं। उपलब्धि अभिप्रेरणा मुख्य रूप से सफलता प्राप्त करने, लक्ष्य निर्धारण और प्रदर्शन सुधारने से संबंधित होती है, जबकि सृजनात्मकता नवीन विचार उत्पन्न करने, कल्पनाशीलता

और विविध चिंतन क्षमता से संबंधित होती है। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में विद्यालयीय वातावरण, संचार सुविधाएँ, शिक्षक सहयोग, सामाजिक समर्थन और अधिगम के अवसर सृजनात्मकता को अधिक प्रभावित कर सकते हैं।

अतः वर्तमान अध्ययन का निष्कर्ष कि सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कमजोर धनात्मक संबंध पाया गया, उन अध्ययनों से समर्थित होता है जो प्रेरणा और रचनात्मकता के मध्य सकारात्मक संबंध स्वीकार करते हैं। वहीं, यह निष्कर्ष उन अध्ययनों के साथ भी सामंजस्य रखता है जो यह मानते हैं कि सृजनात्मकता अनेक कारकों से प्रभावित होने वाली जटिल क्षमता है। इसलिए उपलब्धि अभिप्रेरणा को सृजनात्मकता का एक सहायक, किंतु एकमात्र निर्धारक कारक नहीं माना जा सकता।

‰4 : गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं है।

तालिका 4 : गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध

चर	छ	स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (च)	सार्थकता मान
उपलब्धि अभिप्रेरणा	150	0.1745	0.03274
सृजनात्मकता	150		

स्वतंत्रता अंश (कf) = 148

सहसंबंध विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (च) का मान 0.1745 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों चरों के मध्य **धनात्मक** किंतु **निम्न स्तर** के संबंध को प्रदर्शित करता है। इसका अर्थ है कि जिन विद्यार्थियों में उपलब्धि प्राप्त करने की अभिप्रेरणा अधिक होती है, उनमें सृजनात्मकता का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त किया जा सकता है। हालांकि, सहसंबंध गुणांक का मान कम होने के कारण यह संबंध अत्यधिक मजबूत नहीं है, बल्कि सीमित स्तर का संबंध दर्शाता है।

सहसंबंध की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच करने पर प्राप्त सार्थकता मान (च मान) 0.03274 प्राप्त हुआ, जो 0. 05 के स्वीकृत स्तर से कम है। अतः उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य प्राप्त हुआ संबंध सांख्यिकीय रूप से **सार्थक** माना जाएगा। स्वतंत्रता अंश (कf) = 148 के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि दोनों चरों के मध्य प्राप्त संबंध केवल संयोग का परिणाम नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के समूह में एक वास्तविक संबंध को प्रदर्शित करता है।

प्राप्त परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना ष्गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई संबंध नहीं हैष अस्वीकार की जाती है। इसका तात्पर्य है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के मध्य सार्थक धनात्मक संबंध विद्यमान है।

यह परिणाम संकेत करता है कि गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों में उपलब्धि प्राप्त करने की अभिप्रेरणा और उनकी सृजनात्मक क्षमता एक–दूसरे से संबंधित हैं। उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थी नए विचारों को विकसित करने, समस्याओं के समाधान खोजने तथा रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के प्रति अधिक सक्रिय हो सकते हैं। हालांकि, सहसंबंध का निम्न स्तर यह भी दर्शाता है कि सृजनात्मकता का विकास केवल उपलब्धि अभिप्रेरणा पर निर्भर नहीं करता, बल्कि शिक्षण वातावरण, विद्यालयीय संसाधन, पारिवारिक सहयोग, आत्मविश्वास और व्यक्तिगत अनुभव जैसे अन्य कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कमजोर किंतु सांख्यिकीय रूप से सार्थक धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ। यह दर्शाता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा में वृद्धि के साथ विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में भी सकारात्मक परिवर्तन की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

विवेचना

उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य सकारात्मक संबंध के समर्थन में **गिलफोर्ड (1950)** ने सृजनात्मकता को व्यक्ति की विविध चिंतन क्षमता से संबंधित माना। उनके अनुसार, उच्च उपलब्धि की इच्छा रखने वाले व्यक्ति समस्याओं के समाधान के लिए नए एवं प्रभावी तरीकों की खोज करने के लिए अधिक अभिप्रेरित हो सकते हैं। इस प्रकार उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति को रचनात्मक प्रयासों में सक्रिय भागीदारी के लिए अभिप्रेरित कर सकती है।

इसी प्रकार, **टॉरेंस (1962)** के शोध से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, समस्या समाधान क्षमता और सृजनात्मक अभिव्यक्ति के मध्य सकारात्मक संबंध पाया जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि अभिप्रेरणा सृजनात्मक उपलब्धियों के लिए आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करती है। वर्तमान अध्ययन में पाया गया कमजोर किंतु सार्थक धनात्मक सहसंबंध इस दृष्टिकोण के अनुरूप है।

डेसी–रयान (1985) के आत्म–निर्धारण सिद्धांत के अनुसार, आंतरिक अभिप्रेरणा व्यक्ति को अधिगम, खोज करने और नवीन कार्यों में संलग्न होने के लिए अभिप्रेरित करती है। इस सिद्धांत के आधार पर यह माना जा सकता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता को

विकसित करने में सहायक हो सकती है। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में, सफलता प्राप्त करने की इच्छा और आत्म–विकास की प्रवृत्ति रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा दे सकती है।

दूसरी ओर, कुछ अध्ययन वर्तमान निष्कर्ष से भिन्न परिणाम प्रस्तुत करते हैं। **अमैबिल (1983)** ने अपने शोध में बताया कि सृजनात्मकता का प्रमुख आधार आंतरिक अभिप्रेरणा, ज्ञान और रचनात्मक कौशल हैं। उनके अनुसार, उपलब्धि प्राप्त करने की बाह्य इच्छा हमेशा सृजनात्मकता को बढ़ावा नहीं देती। कई परिस्थितियों में प्रदर्शन और सफलता पर अत्यधिक ध्यान देने से व्यक्ति स्वतंत्र चिंतन और नवीन विचारों के विकास में कम रुचि ले सकता है।

इसके अतिरिक्त, कुछ शोधकर्ताओं ने यह तर्क दिया कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता अलग–अलग मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से संबंधित हैं। उपलब्धि अभिप्रेरणा मुख्य रूप से लक्ष्य प्राप्ति, प्रतिस्पर्धा और प्रदर्शन सुधार से जुड़ी होती है, जबकि सृजनात्मकता मौलिकता, कल्पनाशीलता और स्वतंत्र चिंतन पर आधारित होती है। इसलिए दोनों के मध्य संबंध कमजोर होना स्वाभाविक हो सकता है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में किए गए अध्ययनों से यह भी संकेत मिलता है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर विद्यालयीय वातावरण, शिक्षक सहयोग, संचार के अवसर, पारिवारिक समर्थन और उपलब्ध संसाधनों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

अतः वर्तमान अध्ययन का निष्कर्ष कि गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कमजोर किंतु सांख्यिकीय रूप से सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया, उन अध्ययनों से समर्थित होता है जो प्रेरणा को सृजनात्मक विकास का सहायक कारक मानते हैं। वहीं, यह निष्कर्ष उन अध्ययनों के साथ भी सामंजस्य रखता है जो बताते हैं कि सृजनात्मकता एक बहुआयामी क्षमता है और इसे केवल उपलब्धि अभिप्रेरणा के आधार पर पूर्णतः स्पष्ट नहीं किया जा सकता।

शैक्षिक निहितार्थ

- विशेष विद्यालयों में उपलब्धि अभिप्रेरणा विकसित करने हेतु प्रेरणात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
- सृजनात्मक गतिविधियों, परियोजना–आधारित अधिगम एवं समस्या समाधान आधारित शिक्षण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सहयोगात्मक एवं समावेशी अधिगम वातावरण विकसित किया जाना चाहिए।
- शिक्षकों एवं अभिभावकों को विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता के विकास हेतु संवेदनशील एवं प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य संबंध सभी श्रवण बाधित विद्यार्थियों में समान नहीं है। लिंग तथा संस्थान की प्रकृति के आधार पर दोनों चरों के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर प्राप्त हुआ। छात्राओं तथा गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों के विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा सृजनात्मकता के विकास से सार्थक रूप से संबंधित पाई गई, जबकि छात्रों एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में यह संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं था। अतः विशेष शिक्षा के क्षेत्र में केवल उपलब्धि अभिप्रेरणा पर बल देना पर्याप्त नहीं होगाय सृजनात्मकता के विकास हेतु विद्यालयी वातावरण, शिक्षण रणनीतियाँ, पारिवारिक सहयोग तथा मनोवैज्ञानिक समर्थन जैसे बहुआयामी कारकों पर भी समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- *अमैबिल, टी. एम. (1983). द सोशल साइकोलॉजी ऑफ क्रिएटिविटी। स्प्रिंगर–वेरलाग।*
- *गिलफोर्ड, जे. पी. (1950). क्रिएटिविटी। अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 5(9), 444–4541*
- *गिलफोर्ड, जे. पी. (1967). द नेचर ऑफ ह्यूमन इंटेलिजेंस। मैकग्रा–हिल।*
- *टॉरेंस, ई. पी. (1962). गाइडिंग क्रिएटिव टैलेंटध्प्रेंटिस–हॉल।*
- *डेसी, ई. एल., एवं रायन, आर. एम. (1985). इंट्रिसिक मोटिवेशन एंड सेल्फ–डिटरमिनेशन इन ह्यूमन बिहेवियर। प्लेनम प्रेस।*
- *मैक्लीलैंड, डी. सी. (1961). द अचीविंग सोसाइटी। वैन नॉस्ट्रेंड।*
- *रनको, एम. ए. (2004). क्रिएटिविटी। एनुअल रिव्यू ऑफ साइकोलॉजी, 55, 657–6871*